

पवन प्रवाह

सत्य का प्रवाह सतत् प्रवाह

डॉक पंजीन संख्या GPO LW/NP-106/2018-2020



कंगना का नया अवतार

पवन प्रवाह

www.pawanprawah.com
e-mail-pawanprawah@gmail.com

विविध प्रवाह

लखनऊ। सोमवार 14 से 20 जनवरी-2019

5

विश्वभर में हिमयुग जैसी स्थिति बर्यौ-एक चिंतन

हम पूर्व के 5 (पाच) अंको में, अमरीकी डोनाल्ड ट्रम्प के अमेरिका में ग्लोबल-वार्मिंग पर दिये गये टिप्पणी व वैश्विक-तापमान की बढ़तेरी तथा कैलिफोर्निया में जंगलो की आग पर दीकरा वैज्ञानिको पर फोड़ने को पढ़ा। आइये आगे पढ़ते है कि विश्वभर में हिमयुग जैसी स्थिति बर्यौ है, क्या पर्यावरण असंतुलन के कारण विनाशकारी स्थिति पैदा हो रही है।

भाग-06

गतांक से आगे

विश्व के तमाम देशों में भारी हिमपात अभी पिछले कुछ दिनों से विश्व के तमाम देशों में भारी हिमपात हो रहा है। यूरोप के पसुर देशों जैसे जर्मनी, स्विट्जरलैंड, आस्ट्रिया आदि स्थानों पर 5 जनवरी से 10 जनवरी 2019 तक 20 सेंटीमीटर से 1 मीटर अर्थात एक फीट से 3.5 फीट तक भारी बर्फबारी ने पूरे देश को बर्फनीले तूफानों के आगोश में ले लिया। यहाँ तक कैलिफोर्निया के उत्तरी पहाड़ी भी इस साल चपेट में है। भारतवर्ष में पिछले एक माह से पहाड़ी इलाकों में तथा राजस्थान के ऊँचे इलाकों में भी भारी बर्फ पड़ी और कई जगह तापमान शून्य से 20 डिग्री सेंटीग्रेड तक नीचे चला गया। इस समय लगभग विश्व के अधिकांश भागों में जन-जीवन अस्त-व्यस्त हो गया है। आइये इस पर विचार करें कि क्या जलवायु हिम-युग की ओर दस्तक दे रही है या यह मात्र ग्लोबल वार्मिंग का कारण है।



हिमपात व चक्रवात आने के मुख्य कारण मध्य अक्षांश के चक्रवात निम्न दबाव वाले क्षेत्र होते हैं जो बादलों और हल्के बर्फनीले तूफानों से लेकर भारी बर्फनीले तूफान तक कुछ भी उत्पन्न करने में सक्षम होते हैं। किसी गोलार्ध के नीचे पहुँचने से, सर्दियों और वसंत के दौरान, महाद्वीपों के ऊपर का वातावरण हिमपात के कारण शीतमंडल की गहराई तक काफी ठंडा हो जाता है।

क्या रिकॉर्ड हिमपात ग्लोबल वार्मिंग का कारण नहीं है ?

आज ग्लोबल वार्मिंग इस छंदे व नीले पृथ्वी ग्रह के लिए परेशानी का कारण बनी हुई है। 2010 में एक नया रिकॉर्ड बनाया गया था, जब शिकागो में लगातार नौवें दिन हिमपात की शुरुआत में 100 साल में एक बार दो-बर्फनीले तूफानों ने फिलार्डेल्फिया को आगोश लिया, जिसे अब कोमेडोरोन कहा जा रहा है। प्रश्न उठता है कि डू बर्या इस प्रकार की रिकॉर्ड बर्फबारी संचित करती है कि ग्लोबल वार्मिंग नहीं हो रही है? इसके अवलोकन से क्या निष्कर्ष निकलता है? जबकि 2009 रिकॉर्ड से यह दूसरा सबसे गर्म वर्ष था। जनवरी 2010। उपग्रह के रिकॉर्ड में सबसे गर्म माह जनवरी 2010 था तथा उपग्रहों का डेटा दर्शाता है कि दूसरा सबसे गर्म माह फरवरी 2010 था। उपरोक्त के

अवलोकन से हमें पता लगता है कि वर्तमान में ग्लोबल वार्मिंग की अफवाहों को, हो रही मौत के कारणों के रूप में, बहुत बड़ा-चढ़ा कर पेश किया जाता है। **भारी बर्फबारी के बँड के क्या कारण हैं?**

संयुक्त राज्य अमेरिका में कहीं भी बर्फ के संकीर्ण बँड हो सकते हैं। 20 नवंबर 2015 को संकीर्ण बर्फबारी का एक उल्लेख उत्तरी अमेरिका-पूर्वी दक्षिण डकोटा और उत्तरी आयोवा में बर्फबारी के कारण पाई गई थी।

इंटरस्टेट 90 के उत्तर में अंतरराज्यीय 90 के दक्षिण से बर्फबारी में बड़े अंतर (या कमी) को नोटिस किया गया। 7-90 के दक्षिण में, स्ट्रब्रॉक फॉल्स के दक्षिण की ओर से उत्तर-पश्चिम आयोवा में दक्षिण में 12 से 18 इंच बर्फ थी। अंतरराज्यीय 90 के उत्तर में, बर्फबारी तेजी से घटकर 6 इंच से भी कम हो गई, जिसमें कोई बर्फबारी के बँड क्यों बनते हैं और बर्फबारी के रूप में इस तरह के एक विशेष अंतर कैसे हो सकता है?

इसके तीन बुनियादी तत्व हैं जो बर्फ के संकीर्ण बँड का उत्पादन करने के लिए वातावरण में आवश्यक हैं। वो हैं:

1. नमी

यह पहला घटक जो स्पष्ट करता है कि बादलों और बर्फ के पडने या उत्पादन के लिए वायुमंडल में हवा में पर्याप्त नमी होनी चाहिए। यदि पर्याप्त नमी नहीं है, तो बर्फ विकसित नहीं होगी। भारी बर्फबारी के

यूरोप में तापमान में भारी कमी और भीषण हिमपात का वैज्ञानिक कारण

यूरोप पिछले 5 जनवरी 2019 से अभी 11 जनवरी 2019 तक भीषण बर्फबारी के चपेट में है, जिसने जनवरी-फरवरी के अंत तक तापमान को सामान्य से नीचे ले जाने की स्थिति पैदा कर दिया है, और रोम में असामान्य रूप से धब्बेदार स्थानों में भारी बर्फ की बौछारें फैली हुई हैं।

मौसम वैज्ञानिकों के अनुसार, वास्तव में कहीं और बेमौसम गर्म हवाओं का परिणाम है, जिसने यूरोप को भीषण ठंड की परिस्थितियों को पहुंचाने में मदद की। यूके मेट ऑफिस ने स्पष्ट किया कि यूरेशिया से एक आर्कटिक धमाका हुआ, जिसे वीस्ट फ्रॉम द ईस्ट कहा जाता है, जो सप्ताहों में रोम को एक दुर्लभ बर्फनीले तूफान की चपेट में

पहुंचा दिया था। दि गार्जियन के अनुसार, लियुआनिया में ठंड के मौसम से कम से कम तीन लोगों की मौत हो गई है, जहां तापमान (-)15 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच गया है। इस घटना के पीछे वैज्ञानिकों का कहना है कि इस साल आर्कटिक पर असामान्य रूप से गर्म मौसम है। रायटर ने बताया कि इस क्षेत्र में तापमान (-) 8 डिग्री सेल्सियस (17.6 फारेनहाइट) के आसपास है। ऐसा लगता है कि ठंड लग रही है, लेकिन यह वर्ष के औसतन पिछले समय की तुलना में लगभग 20 डिग्री सेल्सियस (36 फारेनहाइट) अधिक है। एक पढ़ते तापमान (-)6.0 से (-) 9.0 डिग्री सेल्सियस हुआ

करता था जो इस वर्ष आर्कटिक पर असामान्य रूप से गर्म मौसम दिखाता है। उपरोक्त तथ्यों से स्पष्ट हो रहा है कि विश्व के तमाम देशों में भारी हिमपात जो हो रहा है वह आर्कटिक पर असामान्य रूप से गर्म मौसम आ जाने के कारण वह की बर्फ की चढ़ाने लगभग आधे से अधिक समाप्त हो गई है और अधिकांशतः या तो वह पिघल कर वाष्पीकरण के माध्यम से जमीन के ऊपर 30000 और 45000 फीट उंचाई पर स्थापित हो गई है जिससे आर्द्रता के बढ़ने के कारण जहाँ भी जलवायु में थोड़ा भी परिवर्तन हो रहा है पुरे विश्व में भारी हिमपात, तूफानी चक्रवात, हुरीकेन, सुनामी आदि

की स्थिति पैदा हो रही है। दोनो ध्रुवों पर वर्ष समाप्त होने से एक तरफ समुद्री सतह में 4-5 फीट तक बढ़ोत्तरी होने की सम्भावना 2030-2040 तक होना नकारा नहीं जा सकता है। जिससे वैश्विक आपदाओं की तीव्रता प्रत्येक वर्ष बढ़ती जायेगी और जन-मानस व जीव-जंतु के भीषण नुकसान को रोकना नहीं जा सकता है। अतः विश्व के सभी देशों को मिलकर ग्लोबल वार्मिंग से उत्पन्न हो रही जलवायु-असंतुलन की विभीषिका को रोकने के सार्थक उपाय करने होंगे जिसमें चाहे अधिक से अधिक पेड़ लगाया हो या हाइड्रोकार्बन ईंधन के जगह वैज्वैलिक अथवा अक्षय ऊर्जा का उपयोग करना हो।

हवा ऐसे क्षेत्र में बादलों को उठाने के लिए मजबूर करती है, जहाँ बर्फ का बनने के लिये सबसे अधिक उपयोगी स्थल होता है। सतह के पास, वायुमंडल आमतौर पर बर्फ के टुकड़े बनाने का एक अनोखा काम करता है, लेकिन जैसे ही वातावरण में वृद्धि होती है और तापमान 0°F से -10°F तक गिरता है, वैसे बर्फबारी बनने का काम अधिक तेजी से हो सकता है। तो उस क्षेत्र में स्थित ऐसा स्थान जहाँ तापमान उस सीमा में है, नम हवा को बढने और जल्दी से बर्फ के टुकड़े बनाने के लिए अधिक प्रेरित कर सकता है।

3.) वायुमंडलीय अस्थिरता

वायुमंडलीय अस्थिरता का मुख्य कारण, हवा का तेजी से ऊपर उठना अति आवश्यक है। जितनी तेजी से हवा चली है, उतनी ही तेजी से बादलों में हिमपात होता है और सतह पर भारी बर्फबारी होती है। गर्मियों में, मौसम विज्ञानी बादलों में गूदाइडेट के उत्पन्न होने के कारण ही अस्थिरता के बारे में बात करते हैं। सर्दियों में भारी बर्फ के बँड से जुड़ी अस्थिरता गर्मियों की तुलना में बहुत कम है, इसलिए बादलों को गरज के साथ देखना दुर्लभ है। इसकी तुलनात्मक स्थिति के लिए, विशिष्ट रूप में बिजली के कड़क के समय हवा 10 मील प्रति घंटे की अधिक गति से आगे बढ़ती रहती है, परंतु गंधीर तूफान में यह गति 100 मील प्रति घंटे तक पहुँच सकती है। सबसे तीव्र बर्फ बारी के लिए, हवा गति 2 मील प्रति घंटे के आसपास रहती है। जबकि गरज के साथ यह धीमी गति, अभी भी बहुत अधिक है जिसकी तुलनात्मक स्थिति आमतौर पर वातावरण में देखी जा सकती है, और यह गति भारी बर्फबारी को पैदा करने में सक्षम है।

अगला अंक 7 भी अवश्य पढ़ें ...

विकसित नहीं होगी। भारी बर्फबारी के